# खंड–'ब'
# आयुर्वेद चिकित्सा अधिकारी (आयुष विभाग) परीक्षा
# –::पाठ्यक्रम ::–

## इकाई–I

### काय चिकित्सा एवं सामान्य रोग उपचार

1. काय चिकित्सा की परिभाषा, चिकित्सा की परिभाषा, भेद, चतुष्पाद, चिकित्सक के भेद, षडविध उपक्रम सिद्धान्त।
2. रसायन, – परिभाषा, रसायन का प्रयोजन तथा महत्व। रसायन के प्रकार तथा रसायन सेवन के कुटी प्रवेशिक, वातातपिक भेद। विविध रसायन योग, आचार, रसायन, रसायन की मात्रा निर्धारण तथा अवस्था के अनुसार मात्रा भेद, वृद्धावस्था जनित विकार एवं चिकित्सा।
3. वाजीकरण– वाजीकरण, परिभाषा प्रयोजन एवं महत्व। विविध वाजीकरण योग एवं उनका गुण, कर्म, मात्रा, सेवन प्रयोग विधि,
4. निम्न व्याधियों का सामान्य कारण, सम्प्राप्ति लक्षण, चिन्ह एवं चिकित्सा–ज्वर, आंत्रिकज्वर, श्लेष्मकज्वर, विषमज्वर, मलेरिया, डेंगुज्वर, चिकनगुनिया, नमोनिया श्लीपद मसूरिका, रोमान्तिक ज्वरों का प्रतिषेधात्मक तथा चिकित्सा का वर्णन,
5. अतिसार, ग्रहणी, प्रवाहिका, अर्श, विसूचिका, परिणामशूल, अम्लपित्त, उदररोग, गुल्म, कृमिरोग, शीतपित्त।
6. आमवात, वातरक्त, राजयक्ष्मा, रक्तपित्त, पांडु, कामला, कास, श्वास, हिक्का, कुष्ठ, प्रमेह, मधुमेह, मूत्रकृच्छ मेदोरोग, अश्मरी आदि।
7. वातव्याधि, पक्षाघात, अर्दित कम्पवात, संधिगतवात, कटिग्रह, गृध्रसी विश्वाची, अबबाहुक, मश्कुलर डिस्ट्रोफी, मोटर न्यूरोन, डिसिज, आक्षेपक।
8. उपदंश, पूयमेह व अन्य सेक्स संबंधि बीमारियाँ जैसे–क्लैव्य, शीघ्रपतन।
9. उन्माद, अपरमार, अतत्वाभिनिवेश, व अन्य मानसिक व्याधियाँ,
10. हृद रोग– हृदयाभिघात, हृच्छूल (हृदयशुल), उच्च रक्तचाप।

### निम्नलिखित योगो के रोगाधिकार, मुख्य घटक एवं गुणधर्म –

1. क्वाथ– षडंगपानीय, फलत्रिकादि, दशमूल, किराततिक्तादि क्वाथ।
2. चूर्ण– सुदर्शन, अविपत्तिकर, लवणभास्कर, बालचातुर्भद्र, पुष्यानुग चूर्ण, लवंगचतुःसम, हिंग्वाष्टक, पंचसकार, सितोपलादि, तालिसादि, त्रिफला, त्रिकटु पंचकोल आदि।
3. गुटिका– शंखवटी, कांचनार गग्गुलु, कैशोर गुग्गुलु, सिंहनाद गुग्गुलु, योगराज गुग्गुलु, संजीवनी वटी, कांकायन वटी, ब्योषादि वटी, चन्द्रप्रभा, वटी, चित्रकादि वटी, लवंगादि वटी, एलादि वटी, रसोन वटी।
4. अवलेह– वासावलेह, च्यवनप्राशावलेह चित्रकहरीतकी अवलेह, व्याघ्रीहरीतकी।
5. आसवारिष्ट – द्राक्षारिष्ट अभयारिष्ट, अर्जूनारिष्ट, अमृतारिष्ट, दशमूलारिष्ट, कुटजारिष्ट, कुमार्यासव, लोहासव, लोधासव, कनकासव, अशोकारिष्ट, चंदनासव, आदि।
6. तैल – नारायण तैल, मरिच्यादि तैल, विषगर्भ तैल, पंचगुण तैल,
7. घृत – फलघृत त्रिफलाघृत, ब्राम्ही घृत।
8. रस–मकरध्वज, रस–सिंदूर, आरोग्यवर्धिनी, मृत्युंजय रस, आनन्द भैरव रस, हिंगुलेश्वर रस, बसन्तकुसुमाकर रस, विषमज्वरांतक लौह, सर्वज्वरहर लोह, सूतशेखर रस, वातकुलान्तक रस, वृहतवात– चिंतामणी रस, जलोदरारि रस, रामबाणरस, पुनर्नवामण्डूर, सप्तामृतलौह, नवायसलौह,कुमारकल्याणरस, गर्भपाल रस, प्रतापलंकेश्वररस, लक्ष्मीविलास रस, रसमाणिक्य, गंधकरसायन,
9. भस्म एवं पिष्टी – शंखभस्म, कर्पदिका भस्म, गोदन्ती भस्म, प्रवालपिष्टी, जहरमोहरा पिष्टी, अकीक पिष्टी, कहरवा पिष्टी, लोह भस्म, स्वर्णमाक्षिकभस्म, शुद्धस्फटिका, स्वर्जिका क्षार, यवक्षार, अमृतासत्व, पंचामृतपर्पटी श्वेतपर्पटी, बोलपर्पटी।

## इकाई-II.

### पंचकर्म एवं आत्यायिक चिकित्सा

### (अ).पंचकर्म

1. पंचकर्म – पंचकर्म में प्रयोज्य कर्म तथा उनका प्रयोजन, परिभाषा तथा विधि का वर्णन, स्नेहन स्वेदन योग्य व्याधियां तथा रोगियों का वर्णन।
2. वमन, विरेचन, शिरोचिरेचन, आस्थापन अनुवासन बस्ति आदि के अतियोग, सम्यक्, योगों का लक्षण अतियोगजनित उपद्रवों का प्रतिकार।
3. स्नेह प्रयोग में विचारणा की उपादेयता तथा प्रकार का वर्णन। स्नेह की मात्रा, स्नेह के द्रव्यों का तथा स्वेदन–क्रिया में प्रयोज्य द्रव्यों का ज्ञान।
4. वमन, विरेचन, शिरोविरेचन, निरूह, अनुवासन, क्रियाओं में प्रयुक्त होने वाले द्रव्यों तथा यंत्रों का ज्ञान।
5. संशोधन के योग्य पुरूष के बल–अबल के अनुसार पंचकर्म के उपयोगी औषध तथा द्रव्यों का विचार।

### (ब). आत्यायिक चिकित्सा

1. आत्यायिक चिकित्सा– आत्यायिक चिकित्सा, परिभाषा ,प्रकार तथा सामान्य चिकित्सा सिद्धान्त।
2. जल, विद्युत, अपघात, दग्ध,तीव्र, रक्तस्त्राव, तीव्र उदरशूल, वृक्कशूल, पिताश्यशोथ शूल, तीव्र उदर कला शोथ, तीव्र आन्त्रशोथ, आंत्रावरोध, तीवग्रश्वास, काठिन्य, मुत्रावरोध, हृच्छूल मूर्च्छा, तीव्र ज्वर, औषध प्रतिक्रिया, विषाक्तता आदि के आत्यायिक अवस्थाओं का विवेचन तथा प्रतिकार।
3. अमृतजल आदि का सूचीभरण, रक्तदान, रक्त शर्करा की कमी व अधिक्य।

## इकाई-III.

### स्वस्थवृत्त, योग एवं राष्ट्रीय कार्यक्रम–

### (अ). स्वस्थवृत्त, योग

1. व्यक्तिगत स्वास्थ्य – स्वस्थवृत्त का प्रयोजन, स्वस्थ का लक्षण, दिनचर्या, रात्रिचर्या, ऋतुचर्या, त्रय उपस्तम्भ, सद्वृत्त, धारणीय अधारणीय वेग, उपवास, निन्दित, अनिन्दित पुरूष, आचार रसायन, मिथ्याहारविहार।
2. आहार विधि – आहार विधि विशेषायतन, पथ्यापथ्य संतर्पण अपतर्पण जन्य व्याधि।
3. आहार, निद्रा, ब्रह्मचर्य का वर्णन – प्रोभूजन–कार्बोज, वसा–खनिज लवण–जीवनीय तत्वों का पोषण में महत्व, अभावजन्य व्याधियां, षड्रस भोजन का महत्व, देश के अनुसार पोषण,
4. पोषण विषयक राष्ट्रीय कार्यक्रम।
5. जल – जल की विविध अशुद्धियाँ, शोधन विधियाँ एवं परीक्षण।
6. अपद्रव्य निवारण व्यवस्था। शव विनाश विधियाँ।
7. संक्रामक रोग – परिभाषा, विसंक्रमण की विधियाँ, जनपदोंध्वंश।
8. व्याधिक्षमत्व प्रकार।
9. योग ज्ञान एवं स्वास्थ्य रक्षा में योग का महत्व।
10. निसर्गोपचार का प्रयोजन तथा महत्व।

### (ब). राष्ट्रीय कार्यक्रम–

1. मलेरिया, नेत्रान्ध्य राजयक्ष्मा, फाइलेरिया, कालाजार, एड्स, कुष्ठनिवारण संबंधित राष्ट्रीय कार्यक्रम का ज्ञान, राष्ट्रीय आयुष मिशन, जरा रोग कम्पेन, क्षारसूत्र कार्यक्रम।
2. मातृ– शिशुकल्याण कार्यक्रम– मातृ– शिशुकल्याण कार्यक्रम का उद्देश्य, महत्व एवं जानकारी, शिशुओं में टीकाकरण की व्यवस्था।
3. विश्व–स्वास्थ्य संगठन आलमाआटा घोषणा पत्र।
4. राष्ट्रीय आयुष मिशन, जरा रोग कम्पेन, क्षारसूत्र कम्पेन, आर.सी.एच. प्रोग्राम, जननी शिशु सुरक्षा, सी.सी.आर.ए. एस., सी.सी.आई.एम., आयुषमान भारत योजना, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण कार्यक्रम आदि राष्ट्रीय कार्यक्रमों की जानकारी।

इकाई–IV

## शल्य तन्त्र

1. **शल्यतन्त्र** – निरूक्ति, परिभाषा एवं प्रयोजन ।
2. यंत्र शस्त्र प्रकार, प्रयोजन एवं दोष।
3. अष्टविध शस्त्र कर्म परिभाषा, प्रकार एवं रोगानुसार कर्म क्रिया।
4. व्रणशोथ, परिभाषा, निदान, लक्षण, प्रकार एवं चिकित्सा।
5. विद्रधि – निदान, लक्षण, प्रकार एवं चिकित्सा। स्तन विद्रधि, यक्रत विद्रधि निदान, लक्षण, चिकित्सा एवं साध्याध्याता।
6. व्रण – निदान, लक्षण, प्रकार एवं चिकित्सा। सद्योव्रण, आगन्तुज व्रण, दुष्टव्रण एवं दग्धव्रण निदान, लक्षण, प्रकार एवं चिकित्सा।
7. रक्तस्राव– निदान, लक्षण, प्रकार एवं चिकित्सा।
8. क्षार, परिभाषा, प्रकार एवं रोगाधिकार अनुसार क्षारकर्म क्रिया।
9. अग्निकर्म परिभाषा, प्रकार एवं रोगाधिकार अनुसार अग्निकर्म क्रिया।
10. रक्तमोक्षण– परिभाषा, प्रकार, प्रयोगविधि एवं उपद्रव।
11. ग्रन्थि, अर्बुद, निदान, लक्षण, प्रकार, चिकित्सा एवं साध्याध्याता।
12. भग्न एवं संधीमोक्ष, निदान, लक्षण, प्रकार, चिकित्सा एवं उपद्रव।
13. मूत्रविकार – मूत्रकृच्छ, मूत्राघात, अश्मरी, निरूद्धप्रकाश, निदान, लक्षण, प्रकार, चिकित्सा एवं उपद्रव।
14. गुदरोग– परिकर्तिका, अर्श, भगन्दर, गुदभृंश एवं गुदविद्रधि, निदान, लक्षण, प्रकार, चिकित्सा एवं उपद्रव।
15. वृद्धि रोग– निदान, लक्षण, प्रकार एवं चिकित्सा।
16. क्षूद्र रोग– प्रकार, लक्षण एवं चिकित्सा।
17. बंध का प्रयोजन एवं प्रकार।

## इकाई–V.

## शालाक्य तंत्र

1. नेत्र शारीर (Anatomy) नेत्र क्रिया शारीर (physiology) एवं नेत्र परीक्षा।
2. संधिगत रोग की संख्या, पूयालस उपनाह, पर्वणी अलजी आदि का निदान एवं चिकित्सा।
3. वर्त्मगत रोग की संख्या उत्संगिनी पोथकी का निदान एवं चिकित्सा।
4. शुक्लगत रोग की संख्या अर्म, पिष्टक, का निदान एवं चिकित्सा।
5. कृष्णगत रोग की संख्या सव्रणशुक्ल, अव्रणशुक्ल आदि का निदान एवं चिकित्सा।
6. सर्वगतरोग की संख्या अभिष्यन्द, अधिमन्थ का निदान एवं चिकित्सा।
7. दृष्टिगत रोग की संख्या कांच, तिमिर, लिंगनाश, (केटरेक्ट) आदि रोगों का निदान एवं चिकित्सा।
8. शिरोगतरोग –सूर्यावर्त, अर्द्धावभेदक, शिरोरोग, इन्द्रलुप्त, खालित्य, पालित्य, अरूषिका, इनके लक्षण तथा चिकित्सा।
9. कर्णरोग –कर्णशूल, कर्णनाद, कर्णक्ष्वेड, कर्णविद्रधि, कर्णस्त्राव, कर्णपाक, कर्णगूथ, बाधिर्य इनके लक्षण तथा चिकित्सा।
10. नासारोग – नासा रोगों की संख्या, प्रतिश्याय, पीनस, अपीनस, क्षवथु, नासार्थ, नासानाह, आदि रोगों के लक्षण तथा चिकित्सा।
11. दन्तरोग – दन्तशर्करा, कृमिदन्त, दालन, दन्तहर्ष आदि रोगो के लक्षण तथा चिकित्सा।
12. दन्तमूलगतरोग – शीताद, दन्तवेष्ट, शौषिर, अधिमांस, आदि रोगो के लक्षण तथा चिकित्सा।
13. जिव्हागतरोग – जिव्हागत रोगों की संख्या, जिव्हाकण्टक,उपजिव्हिका इनके लक्षण तथा चिकित्सा।
14. तालुरोग – संख्या गलशुण्डिका,तुण्डिकेरी,तालुपाक, आदि के लक्षण तथा चिकित्सा।
15. कण्ठगतरोग – संख्या कण्ठशालूक के लक्षण तथा चिकित्सा।
16. मुखपाक – भेद, लक्षण तथा चिकित्सा।
17. क्रिया कल्प –सैक, आश्चोतन, तर्पण, पुटपाक, अंजन, कर्णपूरण, कवल एवं गण्डूष विधियों की प्रयोग पद्धति एवं प्रयोजन।

## इकाई–VI.

### प्रसूति तंत्र– स्त्री रोग

1. रजोविज्ञान– आर्तव, रजोत्पत्ति, रज का प्रमाण–मात्रा स्वरूप,कार्य, रजोनिवृत्ति, स्तन स्तन्य, आर्तव, – संबंधि ज्ञान।
2. गर्भविज्ञान – गर्भावक्रान्ति, गर्भव्याख्या, शुक्रवर्णन गर्भसंभव सामग्री, गर्भ में लिंग निर्णायक लक्षण और परीक्षण, गर्भाकृति, गर्भ मासानुमासिक वृद्धि, अपरा निर्माण, अपरा विकृति, गर्भोपक्रम, नाभिनाडी गर्भप्रकृति विकृति ज्ञान।
3. गर्भिणी विज्ञान– सद्योगृहीत गर्भा के लक्षण, पुंसवनविधि, गर्भिणी निदान एवं लक्षण।
4. गर्भ व्यापद– गर्भस्त्राव,गर्भपात, उपविष्टक, नागोदर, लीनगर्भ, मूढगर्भ, मृतगर्भ अकालप्रसव कालातीतप्रसव, गर्भजन्यविषमयता।
5. गर्भिणी चर्या– रक्तचाप, नाडी भार, रक्त, मल, मूत्र, योनिस्त्राव परीक्षा। गर्भिणी आहार, विहार, दिनचर्या संबंधित निर्देश।
6. प्रसव विज्ञान – परिभाषा, अवधि हेतु, आसन्न–प्रसवा लक्षण, प्रसवपत्रिका, उपस्थित प्रसव लक्षण, प्रसवकालावस्थ प्रबंधन।
7. प्रसव व्यापद – प्रसवोत्तर रक्तस्त्राव, गर्भसंग, अपरासंग।
8. सूतिका विज्ञान – सूतिका काल, सूतिका कालान्तर्गत परिवर्तन व्यवस्था, सूतिका आहार, सूतिका ज्वर, लक्षण चिकित्सा एवं साध्यासाध्यता।
9. स्तन्य – स्तन्यदुष्टि, अल्पप्रवृत्ति, प्रचुरप्रवृत्ति, निदान तथा चिकित्सा।
10. स्त्री रोग –रजोक्षय रजोदुष्टि, कष्टार्तव, रक्तप्रदर, योनिव्यापद, योनिभ्रंश, बन्ध्यत्व हेतु, भेद, लक्षण एवं चिकित्सा।
11. स्तनकीलक, स्तनविद्रधि निदान, लक्षण एवं चिकित्सा।

## इकाई–VII.

### (अ). कौमारभृत्य

1. सद्योजात – जातमात्र–नवजात– बालक की परिचर्या, स्तन्य के अभाव में पथ्य, अन्य दुग्धपान एवं लेहन कर्म, रक्षोघ्न कर्म, जात कर्म संस्कार, कर्ण वेधन संस्कार।
2. धात्री परीक्षा – बालक का मानसिक शारीरिक वृद्धि तथा विकास।
3. बालरोग परीक्षण एवं वय भेद के अनुसार औषधि मात्रा निर्धारण।
4. बालगृह दुष्टिजन्य रोग लक्षण एवं चिकित्सा।
5. व्याधिक्षमत्व – व्याधिक्षमत्व न्यूनताजन्य विकृतियाँ से उत्पन्न व्याधियाँ एवं सामान्य परिचय।
6. राष्ट्रीय टीकाकरण कार्यक्रम ।

### (ब). व्यवहार आयुर्वेद एवं अगद तंत्र

1. व्यवहार आयुर्वेद –परिभाषा, विष–परिभाषा, उत्पत्ति, विष क्रिया एवं विष के प्रकार।
2. मद्यविष – मद्यविष के दोष तथा गुण। मद की विभिन्न अवस्थाएं, मदात्यय का लक्षण एवं चिकित्सा।
3. जंगम विष – सर्पविष, विष के अनुसार सर्पो के भेद, सर्पदंश के लक्षण एवं चिकित्सा।
4. वृश्चिकविष – लूताविष, मूषकविषों के लक्षण तथा चिकित्सा। अलर्कविष लक्षण, चिकित्सा एवं साध्यासाध्यता।
5. उपविषो का वर्णन – लक्षण एवं चिकित्सा। कुपीलू, भल्लातक, अहिफेन, धतूर, भांग, अर्क एवं जयपाल।
6. खनिज विष – पारद, नाग, वंग, गौरीपाषाण तथा ताम्र आदि का प्रभाव, लक्षण एवं चिकित्सा।
7. न्यायालय एवं उनकी शक्तियाँ, चिकित्सकीय प्रमाण पत्र, मृत्युकाल के समय लिखित अथवा मौखिक साक्ष्य।
8. व्याभिचार – अप्राकतिक कर्म, गर्भपात, भ्रूणहत्या, कौमार्य का व्यवहारायुर्वेदीय परिज्ञान।
9. चिकित्सकीय कर्तव्य, आचार–नियम व्यावसायिक अधिकार तथा गोपनीयता।

## इकाई–VIII-

### आयुर्वेद सिद्धान्त –(मौलिक सिद्धान्त शरीर रचना, शरीर क्रिया एवं रोग निदान)

1. आयु परिभाषा, स्वास्थ्य परिभाषा, पंचमहाभूतों का दोषों से संबंध, षड्विध क्रिया काल का ज्ञान वातपित्त एवं कफ के भेद, गुण तथा कर्म।
2. धातु– भेद, कर्म, निरुक्ति। पोषण क्रम सिद्धान्त। रस, रक्त मांस, भेद, अस्थि मज्जा, शुक्र–इनकी निरुक्ति उत्पत्ति एवं सामान्य गुणकर्म वर्णन रस से शुक्र तथा आर्तव की उत्पत्ति, ओज की उत्पत्ति तथा गुण। उपधातुओं की उत्पत्ति प्रकार तथा गुण।
3. मल – भेद, महत्व, कर्म।
4. दोषों के प्रकोप के कारण, वृद्धि क्षय के कारण एवं लक्षण।
5. दोषों का कोष्ठ से शाखा आदि में गमन, शाखा आदि से कोष्ठ में गमन।
6. दोष– दूष्य का आश्रय– आश्रयीभाव।
7. दोषों के चय– प्रकोप आदि के हेतु।
8. क्रियाकाल, दोषों के संचय के लक्षण, व्यापन्न ऋतुओं में दोष प्रकोप एवं लक्षण। प्रसर का विशेष लक्षण एवं स्थानसंश्रय का वर्णन।
9. सप्त पदार्थ, द्रव्य–रस–गुण–वीर्य–विपाक–प्रभाव–कर्म– इनके सामान्य परिचय।
10. निदानपंचक का महत्व – हेतु (कारण) पूर्वरूप, रूप, उपशय, सम्प्राप्ति का परिचय एवं महत्व, नाडी–मूत्र आदि अष्टविध परीक्षा तथा षड्विध परीक्षा।
11. कोष्ठ, कोष्ठांग की परिभाषा, हृदय, फेफडें, यकृत, प्लीहा, अग्नाशय, वृक्क, मूत्र प्रसेक (वाहिनी) वस्ती, गर्भाशय, महास्त्रोतस, की रचना एवं कार्य संबंधी ज्ञान, अन्न का पाचन, मूत्र निर्माण, रक्त संवहन, श्वसन क्रिया का ज्ञान, पञ्च ज्ञानेन्द्रियों की रचना एवं कार्य का ज्ञान।

## इकाई–IX

### रस शास्त्र एवं भैषज्य कल्पना

1. रस शास्त्र का इतिहास एवं क्रमिक विकास,
2. भैषज के पर्याय एवं भेद।
3. पारद शोधन एवं उसके संस्कार,
4. महारस, उपरस, साधरणरस सामान्य ज्ञान।
5. विष– उपविष उसके शोधन एवं संस्कार।
6. पञ्चविधिकषायकल्पना– स्वरस, कल्क, क्वाथ, फाण्ट, हिम।
7. षडंगपानीय, उष्णोदक, तण्डूलोदक, लाक्षारस, औषधयूष, अर्क, पानक, रसक्रिया, अवलेह, चूर्ण, वाटिका, गुटिका, चन्द्रिका, पिण्ड, मोदक, वर्ति, गुदवर्ति, गुग्गुलकल्प, लवणकल्प, पुटपाक, क्षीरपाक, क्षार निर्माण, मण्ड, पेया, विलेपी, कृशरा, यूष, द्राव।
8. अंजन, आश्च्योतन, विडालक, नेत्रकल्प, यंत्र, पुट, तुला, कूपीपक्व कल्पना, गंधकशोधन विधि।

## इकाई–X

### द्रव्य गुण विज्ञान

- द्रव्य, द्रव्यगुण शास्त्र का लक्षण, द्रव्यगुण के पदार्थ ( पञ्चपदार्थ, सप्तपदार्थ), द्रव्यों के नामकरण एवं वर्गीकरण का सामान्य परिचयात्मक ज्ञान, प्रशस्त भेषज, प्रयोज्यांग, भेषज प्रयोग मार्ग एवं काल।
- द्रव्यों का संयोग–विरोध, द्रव्यों का संग्रहण–भण्डारण, द्रव्यगत् अशुद्धियों का सामान्य विशिष्ट शोधन, अपमिश्रण एवं प्रतिनिधि द्रव्य।
- औषध द्रव्यों का सामान्य परिचय { गण, कुलनाम, स्वरूप, रासायनिक संघटन, उत्पत्ति स्थान, मुख्य पर्याय, दोष, अधिष्ठान भेद से कर्मज्ञान, आमयिक प्रयोग, विशिष्ट प्रयोग, विविध कल्पनाएँ, विशिष्ट योग, मात्रा, अनुपान, विषाक्त प्रभाव एवं उनका निवारण।}

....XXX...